कविताओं
पर केंद्रित अंक

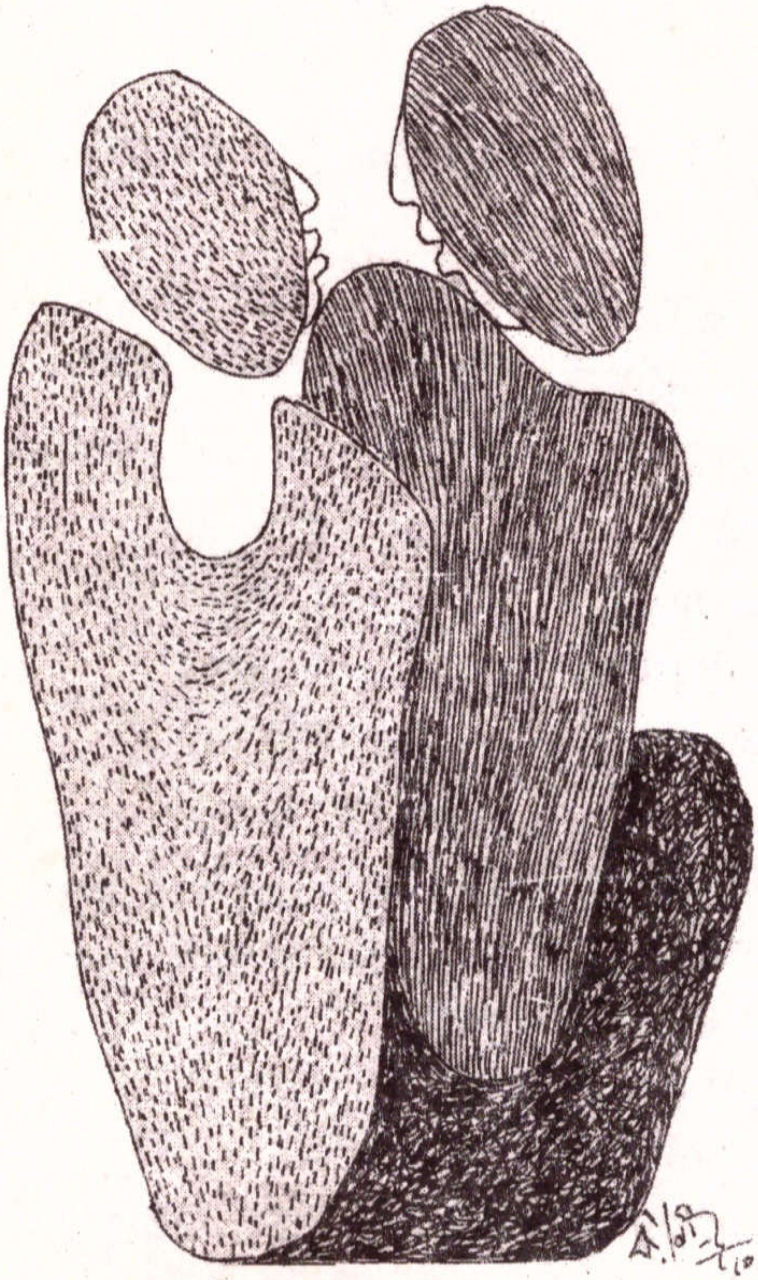

संकेत

कविता केंद्रित लघुपत्रिका

अंक 7 जन–मार्च 2011

सँकेत

कविता केन्द्रित लघु पत्रिका
जनवरी-मार्च 2011

संरक्षक : दलजीत सिंह कालरा

सम्पादक : अनवर सुहैल

सम्पादन- संचालन एवम् प्रबंध पूर्णतः अव्यवसायिक, अवैतनिक पत्रिका में प्रकाशित विचार के लिए लेखक उत्तरदायी, सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं।

अक्षर संयोजन : प्रकाश शर्मा

कला संपादक : के. रवीन्द्र
एफ-6 पी.डब्ल्यू. डी. कॉलोनी, कटोरा तालाब
सूर्या अपार्टमेन्ट के सामने, रायपुर छ.ग.

सम्पर्क :

सम्पादक, टाईप IV / 3, आफीसर्स कॉलोनी, बिजुरी कॉलरी
पो. बिजुरी, जिला- अनूपपुर (म. प्र.) पिन- 484 440
फोन : 07658 - 264920, मो. 09907978108
ई-मेल : sanketpatrika@gmail.com

यह अंक : पन्द्रह रुपये
विशेष सहयोग : 100 रुपये आजीवन सहयोग 500 रुपये

श्रीमती नाजरा पैकर की ओर से श्री प्रकाश शर्मा द्वारा महामाया प्रिंटिंग प्रेस

अपनी बात :

हंस के जनवरी 2011 अंक में 2010 का सिंहावलोकन करते हुए भारत भारद्वाज ने ढेर सारी हिन्दी लघुपत्रिकाओं का नाम लिया और अंत में 'आदि' कह कर संकेत जैसी लघुपत्रिकाओं को हतोत्साहित किया है। वो बड़े मासूम हैं, उन्हें नहीं पता कि वे क्या कर रहे हैं ? 'तिरी इक निगाह की बात है / मिरी ज़िन्दगी का सवाल है।' ढेर सारी पत्रिकाओं के बीच मैं अपनी कृशकाय पत्रिका संकेत का नाम खोजता रहा और फिर हतोत्साहित होकर मैंने सोचा कि मैं **संकेत** क्यों निकाल रहा हूं ? क्या मुझे किसी डॉक्टर ने प्रेस्कृप्शन तो नहीं दिया है कि पत्रिका न निकालोगे तो किसी बड़ी बीमारी का शिकार हो जाओगे। 'और भी ग़म हैं ज़माने में मुहब्बत के सिवा!' यह बड़े फख्र की बात है कि मैं हिन्दी का लेखक हूं और बाल-बच्चों के पालन-पोषण के लिए हिन्दी का मुहताज नहीं हूं। कोयला खदान में श्रमसाध्य कार्य करता हूं। कोल इंडिया में अच्छा वेतन है। सुख-सुविधाएं हैं। हां, भूमिगत कोयला खदान में काम के दौरान शारीरिक और मानसिक रुप से इतना थक जाता हूं कि उसके बाद सिर्फ और सिर्फ कम्प्यूटर पर लेखन ही किया जा सकता है। लेकिन जाने क्या फितूर सवार हुआ और मैंने मित्र दलजीत सिंह कालरा और पत्नी नाज़रा से बात कर **संकेत** निकालने का मन बनाया। मध्यप्रदेश का उपेक्षित ज़िला है अनूपपुर जिसका एक करस्बा बिजुरी है जहां महामाया प्रिंटर्स के प्रकाश शर्मा से मिलकर हम संकेत के अंक तैयार करते हैं। मेरा और मेरे मित्रों का विचार है कि संकेत जैसे प्रयास ही लघुपत्रिका के पैमाने पर खरे उतरते हैं। चूंकि हमारे पीछे कोई लेखक संगठन नहीं है, प्राध्यापक-परामर्शदाताओं और धन्नासेठ न्यासियों जैसा कोई वंश-वृक्ष नहीं है। इतनी उपेक्षा की जाएगी हमारी कि हमारा आत्म विश्वास डोल जाए। क्या हमारा प्रण इतना कमज़ोर है? नहीं, एकदम नहीं, संकेत के रुप में कविता संवाद की पत्रिका का सफर ज़ारी रहेगा। इसमें शामिल सुविज्ञ पाठकों के पत्र क्या ये साबित नहीं करते कि लोकधर्मी, जनपक्षधर कविताओं को पाठकों का स्नेह मिल रहा है। सम्पादकीय के बहाने हम भारत भारद्वाज जी से अनुरोध करते हैं कि वे शोरोगुल तो सुनें ही लेकिन ख़ामोशियों की चीत्कार की तरफ भी उनके कान रहें। **संकेत** का सातवां अंक **विष्णुचंद्र शर्मा** की कविताओं पर केंद्रित है। विष्णुचंद्र शर्मा अपनी सोच में कितने युवा हैं, इसे आप महसूस करेंगे। उनकी कविताओं का विषय है 'ढाई आखर' और ढाई आखर के रुप में प्रेम कविताएं हैं। यह साल शमशेर बहादुर सिंह का जन्मशती वर्ष भी है और इस बहाने **शमशेर** पर विष्णुचंद्र शर्मा की

विष्णुचंद्र शर्मा की कविताएं

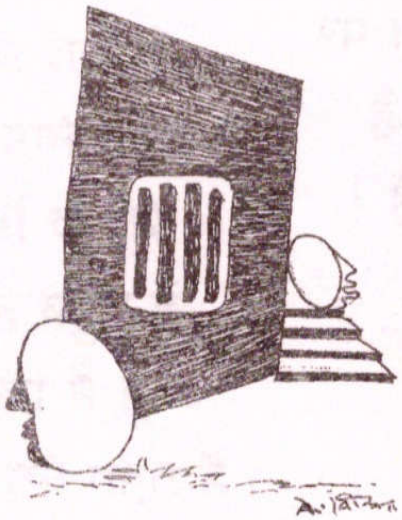

ढाई आखर

1. हंसी की भाषा

सोए-सोए लड़की
आंखों से हंसती है,
मैं, उसकी भाषा
पढ़ नहीं सका हूं !

बताना दोस्त !
हंसी की भाषा
कहां जन्मी थी ?

उमराव जान : कविता संग्रह
प्रभात पाण्डेय
समय प्रकाशन दिल्ली 02
पृ. 128 मू. 150 सं. 2010

लम्बी कविताएं लिखना एक बड़ा जोखिम उठाना है। आज के इस तीव्रगामी दौर में जब क्रिकेट के पांच दिन से घट कर 20 ओवर में आ सिमटा है, प्रभात पाण्डेय ने उमराव जान के बहाने एक लम्बी कविता लिखी है। 'उमराव जान' इतिहास और जनश्रुति का अनूठा संयोग है। 2006 में लखनऊ प्रवास के दौरान प्रभात पाण्डेय ने जिज्ञासवश कर्बला के इमामबाड़े गए और वहां कब्रों के धूमिल से निशान नज़र आए। इन्हीं में से एक कब्र के सिरहाने था हरसिंगार का मझोला सा दरख़्त, जिसके बाजू से बहती थी एक पतली सी नहर। उसी कब्र में सोई है मशहूर तवायफ़ उमराव जान। उमराव जान के ख़्वाब में रुह फूंकने की कोशिश ने कवि को बेचैन किया और नतीजतन 'उमरावजान' नामक लम्बी कविता की किताब के शक्ल में आई।

कवि ने जिस उमरावजान को अपनी कलम से गढ़कर सम्वाद किया है वह मिर्ज़ा हादी रुसवा की उमरावजान नहीं है, वह मुज़फ्फर अली की या संजय लीला भंसाली की उमरावजान नहीं है। प्रभात पाण्डेय की उमराव जान अपने समय के इतिहास से रु ब रु हुआ करती थी। वह तत्कालीन घटनाक्रम की मूक दर्शक नहीं थी। अपने इल्मो हुनर की नुमाईश के अलावा प्रभात पाण्डेय की उमरावजान अपने समय को बड़ी बारीकी से देख-सुन रही थी।

''शहर की सड़कें / शहर का बाज़ार / चाहे-अनचाहे तमाम सरोकार
कि इज़्ज़त - फिर भी ज़िल्लत ही ज़िल्लत
कि नेकनामी - फिर भी बदनामी ही बदनामी
कि सुर्खरुई / कि ज़र्दरुई / हुई
हर जगह हुई इज़्ज़तफरोशी / तिस पर भी बाज़ार की
ख़ामोशी / ख़ामोशी / ख़ामोशी।'

ऐसे ही गंगा-जमुनी ज़ुबान की चाशनी से लबरेज़ है प्रभात पाण्डेय का कलाम। ऐसे समय में जब कविता के अंत की घोषणाएं हो रही हों, कितना ताज्जुब होता है कि किसी कविता को आप पढ़ना शुरु करें और पढ़ते चले जाएं। शब्दों की अद्भुत लयकारी है उमरावजान में। किसी शास्त्रीय राग की तरह प्रारम्भ, आरोह-अवरोह, मंद्र-द्रुत लयकारी। वाजिद अली शाह का परीखाना, अब्दुल हलीम शरर की गुज़श्त लखनऊ के अनुवादों का अध्ययन कर उमराव जान को ख़िराजे अक़ीदत पेश करने का ये नायाब तरीका है। इस लम्बी कविता में आपकी मुलाकात होगी उस उमराव जान से जो सदा हमारे बीच रहेगी अपनी भरपूर संजीदगी और रुमानियत के साथ।

'पूछा तो कुछ न बोला / सिरहाने का हरसिंगार / शाख़ों से टपका दिए उसने / फूल दो चार...''

--अनवर सुहैल

2. नींद खो गई है

कंबल में लिपटी
लड़की मोबाईल पर
किसे बता रही है
-नींद खो गई है !

3. अमलताश

ड्राइंग-रुम के अमलतश को
नहीं पता है
वसंत क आगमन का!
पतझर में झर जाती हैं पत्तियां
दूर तक हवा में
उड़ते हैं पीले फूल!
मैं गमले में सजा
अमलताश नहीं हूं!
वसंत में चमकती है
मेरी पत्तियां
उड़ते हैं झालरदार
पीले फूल...